बच्चों के स्कूल लौटने पर उनके सीखने के प्रति एक समग्र नज़रिया

जेन साही

यह लेख लॉकडाउन और उससे उभरी उथल-पुथल के संकट के तुरन्त बाद जो कुछ चीज़ें की गईं उन पर नज़र डालता है। लेख में इस बात पर विचार किया गया है कि जैसे-जैसे बच्चे स्कूल लौट रहे हैं, हम उनकी ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए किस तरह के क़दम उठा सकते हैं, विशेष कर छोटे बच्चों के लिए।

कोविड-19 के पहले हमले से असंगठित क्षेत्रों में काम कर रहे श्रमिकों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा। इससे एक आपात स्थिति उत्पन्न हुई जहाँ कई लोगों के पास भोजन, आश्रय और स्वास्थ्य सेवा का अभाव था। कई बच्चे कठिनाइयों, उपेक्षा, अभाव के साथ ही इस डर से भी गुज़रे कि उनका क्या होगा क्योंकि वे महामारी के ख़तरों और जोखिमों के बारे में टीवी पर समाचार देखते थे या घर में बड़े लोगों के बीच होने वाली बातें सुनते थे।

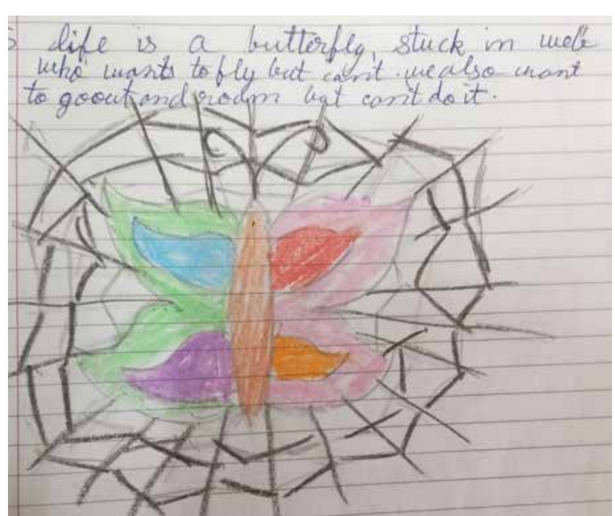
पिछले वर्ष के दौरान कई सारी संस्थाओं, स्कूलों, पुस्तकालयों, शिक्षकों और स्वयंसेवियों ने न केवल सक्रिय रूप से बच्चों की शारीरिक ज़रूरतों पर ध्यान दिया बल्कि उनकी सृजनात्मक ज़रूरतों का भी ख़्याल किया। क्राफ़्ट की गतिविधियों, कहानियों या उनके प्राकृतिक परिवेश के बारीक़ अवलोकन जैसी गतिविधियों से उन्हें जोड़ने की कोशिश की।

प्रकाशकों, कहानी सुनाने वालों, पुस्तकालय शिक्षकों, चित्रकारों और लेखकों ने ऑनलाइन कहानियाँ उपलब्ध करवाने का भरपूर प्रयास किया। कई स्वयंसेवियों ने मोबाइल फ़ोन पर बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाईं या परिवारों को 'क़िताबों के झोले' प्रदान किए। प्रथम बुक्स द्वारा स्थापित *स्टोरी वीवर (Story Weaver)* ने 26 से अधिक भाषाओं में अनेक पुस्तकों को नि:शुल्क रूप से ऑनलाइन उपलब्ध करवाया।

स्टोरी वीवर द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें सीधे महामारी से सम्बन्धित थीं। ये अलग-अलग आयु समूहों के लिए थीं और इनमें विशेष लेकिन बहुत प्रासंगिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया। इनमें से एक है *कोरोनावाइरस : हम यूँ बच सकते हैं (The Novel Coronavirus : We can Stay Safe)*।[i] यह क़िताब बच्चों को ऐसे कुछ कारणों को समझने में मदद करती है, कि जो चीज़ें हुई, वे क्यों हुई। ये बातें इस तरह से प्रस्तुत की गईं हैं कि छोटे-से-छोटे बच्चे वायरस से ख़ुद का और दूसरों का बचाव करने का काम कर सकते हैं। *हमारे सुपरहीरो (Everyday Superheroes)* एक और क़िताब[ii] है जो संकट के समय में हमारी अन्तरनिर्भरता को और इस बात को दर्शाती है कि कैसे हर एक व्यक्ति ज़िम्मेदारी लेने के प्रति एक सकारात्मक भूमिका निभा सकता है।

कहानियाँ सुनाने और पढ़ने के अलावा कुछ संस्थाओं ने बच्चों को ख़ुद की कहानियाँ, चित्र और जर्नल रचने के लिए प्रोत्साहित किया। शुरुआत में, यह ख़ासतौर से बच्चों के महामारी के अनुभव के सम्बन्ध में था। निम्नलिखित दो ऐसे उदाहरण हैं कि पेशेवरों ने किस तरह बच्चों के साथ जुड़ाव बनाने के प्रयास किए। बेंगलूरु में ऐसा एक संगठन है *बुगुरी* जो कचरा बीनने वाले समुदाय के साथ काम करता है। उन्होंने सफलतापूर्वक एक रेडियो स्टेशन स्थापित किया जिसके माध्यम से वे कहानियों, समाचारों और जानकारियों का प्रसारण करते थे। इसमें शामिल थी एक बोलते पेड़ की कठपुतली जो महामारी के बारे में बच्चों के सवालों का जवाब देती थी। *बुगुरी* बच्चों को वायरस के बारे में उनकी समझ और उसके प्रभावों के बारे में उनकी भावनाओं को चित्रों और कॉमिक पट्टियों द्वारा अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करती थी।

मुम्बई स्थित शैरन इंग्लिश स्कूल ने विभिन्न तरीक़ों से बच्चों से जुड़ाव बनाया। वे बच्चों को अपनी बदलती भावनाओं, एकाकीपन के बोध और उन पर लगे भौतिक प्रतिबन्धों से

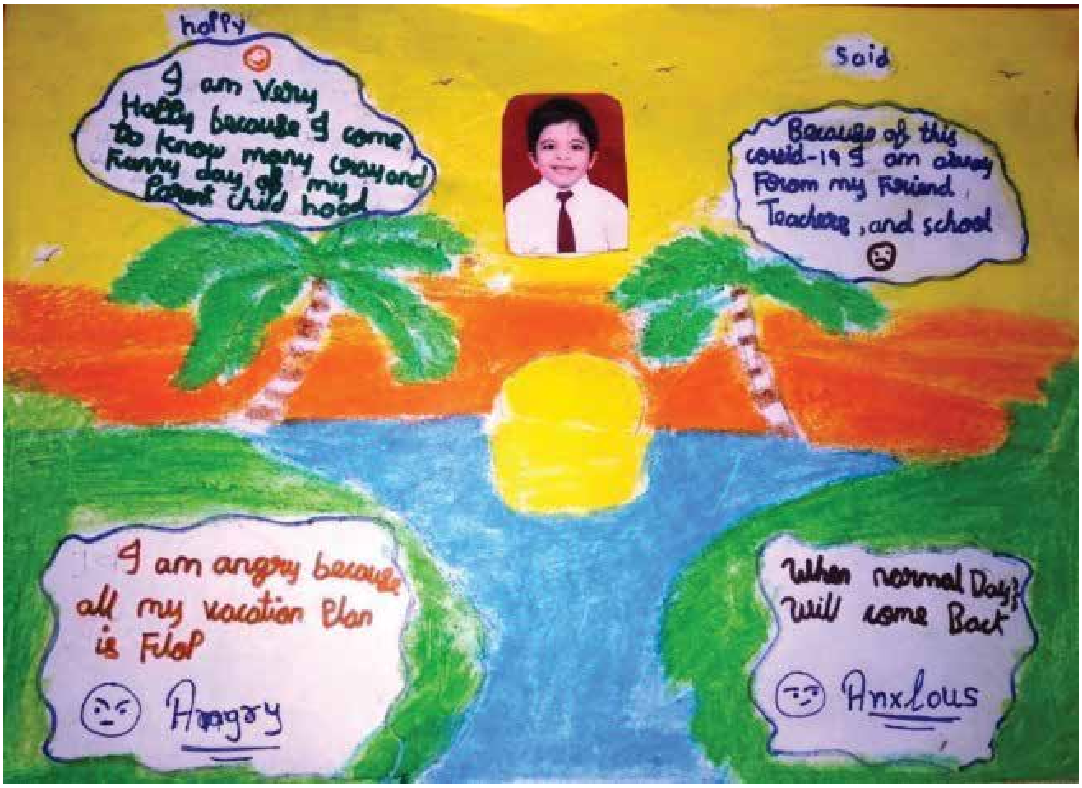


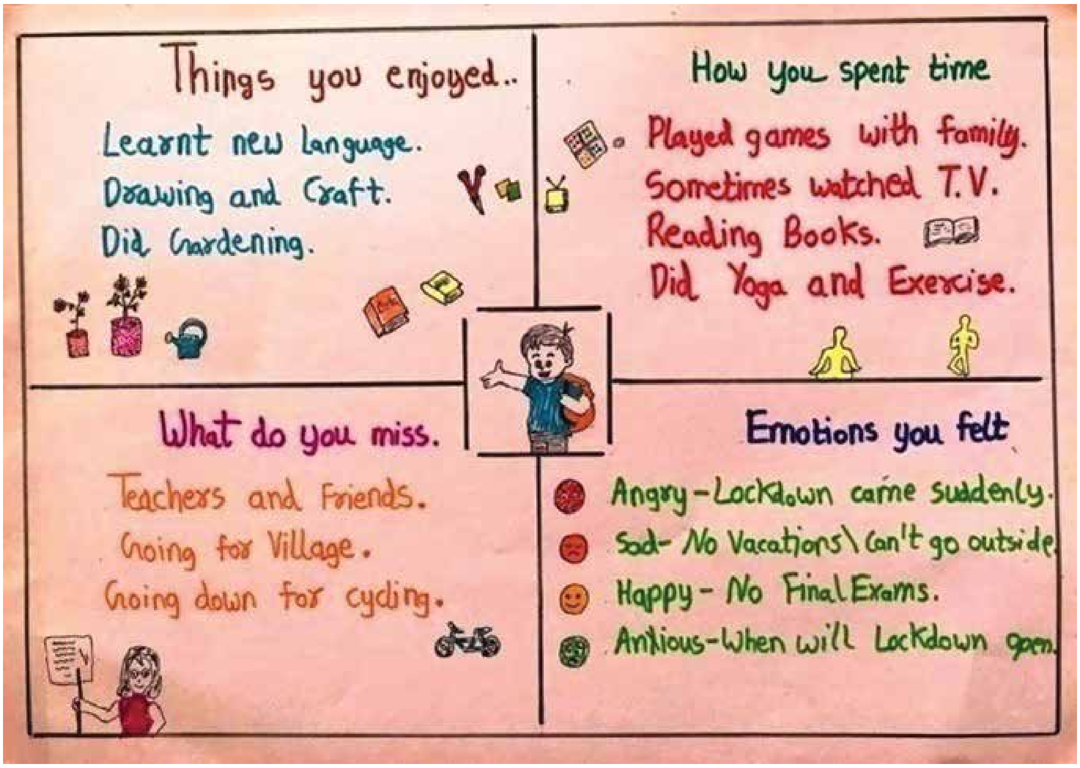
लॉकडाउन में गुज़रे जीवन पर कक्षा आठवीं के विद्यार्थी द्वारा बनाया गया चित्र।

उपजी कुंठा व निराशा को पहचानने के लिए रूपकों के माध्यम से सोचने के लिए प्रेरित करते थे।[iii] एक लड़की ने लिखा, 'जीवन एक तितली की तरह है जो जाल में फँसी है, जो उड़ना चाहती है, पर उड़ नहीं सकती। हम भी बाहर जाना चाहते हैं।' एक लड़के ने लिखा कि लॉकडाउन में जीवन एक बिना चाबी की कार की तरह था क्योंकि आने-जाने के लिए हमारे पास टाँगें तो थीं लेकिन हमें बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी।

अन्य बच्चों ने कहा कि वे पिंजरे में बन्द शेर या घर में नजरबन्द व्यक्ति जैसे महसूस कर रहे थे।

उसी स्कूल के बच्चों को शब्दों और चित्रों द्वारा यह दर्शाना था कि उन्हें क्या करने में मज़ा आया, वे अपना समय कैसे बिताते थे, उन्हें किन चीज़ों की कमी खली और उन्होंने कौन-सी भावनाएँ महसूस कीं। उनकी प्रतिक्रिया काफ़ी विविध थी। नीचे दो उदाहरण पेश किए गए हैं :





फिर भी, अधिकांश बच्चे अपनी चिन्ताएँ न तो व्यक्त कर पाए और न ही कोई उन्हें सुन पाया। भौतिक और अकादमिक चुनौतियों के अलावा, कई सारे बच्चों को विस्थापन, परिवार में मृत्यु, घर में मतभेद, अकेलेपन या चीज़ों की विकट कमी के अपने अनुभवों को व्यक्त करने का अवसर नहीं मिला। ज़ाहिर है, इन बातों ने बच्चों को उनकी उम्र, स्वभाव और परिस्थितियों के अनुसार अलग तरह से प्रभावित किया होगा। पर ऐसे अनेक बच्चों ने भी मीडिया पर दर्शाई गई अफ़रा-तफ़री और दहशत को देखा-सुना होगा, जो प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित नहीं हुए थे। सभी बच्चे पीड़ित नहीं हुए हैं या उन्हें आघात नहीं पहुँचा है, लेकिन बच्चों का जीवन निश्चित रूप से बदल गया है और बाधित हो गया है। कई बच्चों के जीवन में एक ख़ालीपन-सा रहा है और उन्हें उत्साहित करने के लिए कुछ ख़ास नहीं था। ग्रामीण इलाक़ों में रह रहे कई सारे बच्चों को खुली जगह और एक-दूसरे के साथ का फ़ायदा रहा है। निश्चित रूप से उनमें से कुछ बच्चे निश्चिन्त और बड़ों के नियंत्रण से मुक्त समय से लाभान्वित हुए होंगे। लेकिन शहरी क्षेत्रों में बच्चों के लिए जीवन अधिक प्रतिबन्धित रहा है।

प्राथमिकताओं पर विविध दृष्टिकोण

बच्चों के कक्षा में वापिस लौटने पर शायद 'आगे बढ़ने' की और उन समस्याएँ को भुलाने की प्रवृत्ति देखने को मिल सकती है जो शायद उनमें से कइयों ने झेली होंगी। बच्चों के लचीलेपन की शक्तियों पर अक्सर टिप्पणियाँ की गई हैं। लेकिन जीवित रहने की इन्हीं रणनीतियों के कई बार दीर्घकालिक परिणाम हो सकते हैं जब बच्चे इन तनावपूर्ण स्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने या समायोजन करने के लिए संघर्ष करते हैं। यदि बच्चों के जीवन में आने वाले इन व्यवधानों का समाधान नहीं किया जाता, तो उनके सीखने की तत्परता और उत्साह में बाधा आ सकती है।

महामारी के बच्चों पर पड़े प्रभावों पर हुई चर्चाएँ मुख्य रूप से अभाव पर केन्द्रित रही हैं या जिसे 'सीखने में प्रतिगमन' भी कहा जाता है। संसाधनों और प्रेरक तत्वों के अभाव में कई बच्चों के साक्षरता और संख्या ज्ञान सम्बन्धी कौशल गम्भीर रूप से प्रभावित हुए हैं। एक विशेष चिन्ता प्रवासी बच्चों की रही है जिनकी घर की भाषा स्कूल में दी जाने वाली शिक्षा की भाषा से अलग होती है। उन्हें अब एक आधी भूली हुई भाषा में सीखने का 'सामना' करना पड़ रहा है। हालाँकि, ऑफ़लाइन विद्यार्थियों के लिए शायद सबसे बड़ा नुक़सान सीखने के एक सकारात्मक माहौल से दूर होना रहा है जहाँ बातचीत को प्रोत्साहित किया जाता था। स्कूल एक सीखने वाले समुदाय की क्षमता प्रदान करता है जहाँ विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों पर अपेक्षाएँ और ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। यह एक ऐसी परिस्थिति होती है जहाँ विद्यार्थी भी एक-दूसरे का सहयोग करते हैं और सीखते हैं। अधिकांश राज्य सरकारों द्वारा इन बच्चों को लगभग 17 महीनों से भी अधिक समय तक प्रोत्साहन या सहयोग देने में दिखाई गई उदासीनता चिन्ताजनक रही है। ज्याँ द्रेज़ लिखते हैं कि किस तरह व्यवस्था ने ऑफ़लाइन बच्चों को उनके हाल पर छोड़ दिया (द *हिन्दू*, अगस्त 15, 2021)।

अधिकांश शिक्षकों को, जो ऐसे बच्चों के साथ काम कर रहे थे जिनके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं थी, यह महसूस हुआ कि कक्षा की संरचना, एक निश्चित पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रणालियों की रूपरेखा के बग़ैर उनके पास बच्चों को देने के लिए कुछ नहीं था। यह स्पष्ट हो गया है कि अति-केन्द्रीकृत व्यवस्था ने न केवल बच्चों, बल्कि उनके शिक्षकों को भी स्वायत्तता से वंचित कर दिया है। अख़बार में एक शीर्षक आलंकारिक प्रश्न पूछता है, 'बच्चे पाठ्यपुस्तकों के बिना क्या सीख सकते हैं?' ऐसा लगता है मानो सीखना और पाठ्यपुस्तकें पर्यायवाची हैं! कर्नाटक में, कुछ विलम्ब से बच्चों को वर्कशीट भरने के लिए सौंपी गईं। लेकिन यह शायद ही बच्चों की वास्तविक ज़रूरतों के प्रति पर्याप्त प्रतिक्रिया है।

कहानियों के माध्यम से अर्थ गढ़ना

तत्काल चुनौती यह है कि हम स्कूल वापस लौटने वाले बच्चों का सर्वोत्तम सहयोग कैसे कर सकते हैं, विशेषकर उन बच्चों का, जिन्हें घर या स्कूल से सहायता नहीं मिली। बच्चों के खोए हुए समय की भरपाई करना और साक्षरता व संख्या ज्ञान सम्बन्धी कौशलों में उनकी महारत को तेज़ करना हमारी प्राथमिकता प्रतीत होती है। इसके लिए पहले बच्चों के सीखने के स्तरों का आकलन करना होगा और फिर उनके लिए प्रासंगिक उपचारात्मक कार्य प्रदान करने होंगे। इससे कक्षा में विभेदित सीखने की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता पर ध्यान दिया जा सकता है। हालाँकि यह भी सीखने की तत्परता की गहरी समस्या के प्रति आंशिक प्रतिक्रिया ही होगी। ख़तरा यह है कि हम शायद भाषा सीखने को अर्थ निकालने (डिकोडिंग) और संकेतीकरण करने (एंकोडिंग) के कौशल प्राप्त करने तक सीमित कर रहे हैं और गणित सिखाने के लिए बच्चों को यांत्रिक अभ्यास करवा रहे हैं। इसके अलावा, पाठ्यचर्या के अन्य पहलुओं, जैसे कला, संगीत, नाटक और पर्यावरण अध्ययन एवं विज्ञानों में प्रायोगिक कार्य को दरकिनार कर दिया जाएगा। ऐसे भी सुझाव हैं कि छुट्टियाँ रद्द कर दी जानी चाहिए! पहले से कहीं अधिक, इस विशेष समय में, बच्चों को सीखने के लिए एक सन्तुलित, समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है और इसमें उत्सव के कुछ अवसर शामिल होने ही चाहिए।

मैं सुझाव दूँगी कि बच्चों को शिक्षित करने की वर्तमान चिन्ताओं के लिए एक सन्तुलित दृष्टिकोण का अर्थ होगा,

व्यक्तिगत शिक्षार्थियों के भाषा और गणित के बुनियादी कौशलों पर ध्यान देना, साथ ही बच्चों की अपने हाथों से काम करने की आवश्यकता को पूरा करना, निकट के परिवेश से उनका जुड़ाव बनाना एवं कल्पनाशील, चिन्तनशील और रचनात्मक गतिविधियों को व्यक्तिगत और सहयोगी, दोनों ही रूपों में स्थान देना।

कहानियाँ साझा करना बच्चों को कल्पनाशील और विचारपूर्वक रूप से जोड़ने का अच्छा तरीक़ा है। शिक्षक, पुस्तकालय शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता कहानियों को सुनने और पढ़ने में बच्चों की सहायता कर सकते हैं और साथ ही उन्हें अपनी कहानियाँ सुनाने और लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

जीवन की तरह, कहानियाँ उभयभावी और मिश्रित गुणवत्ता की हो सकती हैं। भोजन की तरह, वे पौष्टिक हो सकती हैं लेकिन अगर उनका यंत्रवत रूप से उपयोग किया जाता है तो वे अपचनीय और अरुचिकर भी हो सकती हैं। कुछ कहानियाँ हास्य के माध्यम से या कोमलता और करुणा की भावनाएँ जगाकर उपचार और सांत्वना की प्रक्रिया में मदद करती हैं। हालाँकि, बच्चों की प्रतिक्रियाओं का अनुमान नहीं लगाया जा सकता और न ही उनमें हेर-फेर की जा सकती है। कहानियाँ सबसे अच्छा तब काम करती हैं, जब वे बहुस्तरीय होती हैं, जिज्ञासा जगाती हैं और बच्चों को अपने तरीक़े से प्रतिक्रिया देने की छूट देती हैं। यह ज़रूरी है कि बच्चों को चुनने के लिए विविध प्रकार की कहानियाँ मिलें।[iv]

कुछ कहानियाँ व्यक्तिगत यादों से सम्बन्धित होती हैं; कुछ अन्य रोज़मर्रा की वास्तविकता पर आधारित होती हैं जिनमें कल्पना के कुछ पहलु शामिल हो सकते हैं। कुछ पुस्तकें जानकारियाँ साझा करने के लिए कहानी की रूपरेखा का उपयोग करती हैं। इन कहानियों से परे, कुछ ऐसी होती हैं जो वैकल्पिक दुनियाएँ निर्मित करती हैं — 'दूर कहीं' या 'कहीं नीचे', उदाहरण के लिए जादू और सम्मोहन की कहानियाँ, वैकल्पिक हक़ीक़त का वर्णन करती हैं; लेकिन ये कहानियाँ रोज़मर्रा की कठिन परिस्थितियों और द्वन्द्वों को समझने या उनका सामना करने का तरीक़ा प्रदान करती हैं।

कुछ कहानियाँ जिनमें स्पष्ट रूप से कोई विशिष्ट समस्याएँ नहीं उठाई जातीं, अवचेतन रूप से काम करती हैं। वे न केवल हानि, जोखिम और अन्याय से सम्बन्धित भय और निराशा को, बल्कि आशा को भी आवाज़ देती हैं। ऐसी कई कहानियाँ हैं जो मुश्किल, दर्दनाक और यहाँ तक कि हिंसक अनुभवों के माध्यम से एक नायक की ख़तरनाक यात्रा का वर्णन करती हैं। ऐसी कहानियों में नायक या नायिका (नर या मादा) दुनिया में काम करने वाली दयालु ताक़तों की सहायता प्राप्त कर आन्तरिक दृढ़ता से अन्ततः जीतते हैं। शास्त्रीय कहानियाँ, जैसे कि महाभारत में बताई गई उत्तंक की कहानी, जिसे मजबूरन अधोलोक में किसी ऐसी खोज के लिए यात्रा करनी पड़ती है, जिसमें उसकी कोई चाहत नहीं है या फिर ध्रुव, जो स्वीकृति की खोज में अकेले ही जंगल के भय का सामना करता है। दोनों कहानियाँ समाधान के रास्ते पेश करती हैं। बुद्धि और जादू की कहानियों का एक मूल्यवान स्रोत है सुधा मूर्ति की *द बर्ड विथ गोल्डन विंग्स* (2009, पफ़िन बुक्स)।

ऐसे समकालीन लेखक हैं जो पारम्परिक कहानियों की शक्ति और रूपकों का उपयोग करते हैं, लेकिन उन्हें फिर से गढ़ते हैं, जैसे कि सलमान रुश्दी की बच्चों की क़िताब *हारून एंड द सी ऑफ स्टोरीज़*। *द हैपी ऐंडिंग* एक ऐसी कहानी है जो यह दर्शाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक है कि आपदा अन्तिम स्थिति नहीं होती। टोवे यानसन का सुझाव है कि एक विकल्प यह है कि 'बच्चे के लिए कहानी को आगे बढ़ाने के लिए खुला छोड़ दिया जाए।'[v]

चमत्कार की कहानियाँ एक जादुई दुनिया के भीतर मौजूद हैं जहाँ जीव और निर्जीव के बीच कोई स्पष्ट रेखा नहीं होती : चट्टानें बात कर सकती हैं, नदियाँ दिशा बदल सकती हैं और पेड़ चल सकते हैं। यहाँ जीवित प्राणियों के बीच तरलता है, जहाँ मेंढक नायक में बदल सकते हैं; नायक पिंजरे में क़ैद पक्षी बन सकते हैं और पक्षी सुनहरी मछली में बदल सकते हैं। इन कहानियों में अन्तर्निहित मान्यता यह होती है कि जीवन जुड़ा हुआ है और व्यवधान व मृत्यु से परे, जीवन में एक निरन्तरता है। पहली नज़र में, ये कहानियाँ सिर्फ़ काल्पनिक लग सकती हैं, लेकिन इनमें एक सूक्ष्म नैतिक रूपरेखा है जो यह स्थापित करती है कि दयालु और अच्छा अन्ततः पुरस्कृत होता है और लालची, आलसी व स्वार्थी को दण्डित किया जाता है। अनपेक्षित मददगार, चाहे इन्सान हों या जानवर, उन लोगों की मदद करते हैं जो सच्चे और स्नेही होते हैं। यथार्थवाद की कमी के लिए ऐसी कहानियों की आलोचना की गई है। लेकिन यह तर्क दिया जा सकता है, जो इतालो कैल्वीनो भी कहते हैं, कि ये कहानियाँ अन्याय, हिंसा और मृत्यु की कड़वी हक़ीक़तों का सामना करती हैं। वे हमारे मार्गदशक के रूप में कार्य करती हैं जब हम एक अस्पष्ट दुनिया में अपना रास्ता खोजते हैं जो उजाले और अँधेरे, दोनों से भरी है।

जब यानुश कोर्चैक, 1940 के दशक में वारसा घेटो में बच्चों के साथ काम करते थे। उन्होंने टैगौर के नाटक *डाक घर* को रुपान्तरित किया ताकि बच्चे उसका मंचन कर सकें। उनका उद्देश्य था कि नाटक के मंचन द्वारा बच्चों को वर्तमान की डरावनी स्थितियों और अनिश्चित भविष्य के आतंकों का मुक़ाबला करने में मदद मिल पाएगी। यह नाटक जीवन और मृत्यु पर एक प्रतीक कथा है, पर फिर भी डब्ल्यू बी येट्स ने उसका वर्णन ऐसी कहानी के रूप में किया है जो 'कोमलता और शान्ति की भावना' व्यक्त करती है।[vi]

बच्चों को चुनने के लिए विभिन्न प्रकार की कहानियों की आवश्यकता होती है। *स्टोरी कार्ड* छोटे बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की कहानियों का एक अद्भुत संसाधन प्रदान करते हैं। उन्हें सोच-समझकर चुना गया है और उनमें खोज, दोस्ती और समानुभूति के विषयों पर कहानियों की एक विस्तृत शृंखला शामिल है। इन्हें कक्षा में बहु-उपयोग के लिए बच्चों के अनुकूल और सुलभ बनाने हेतु सावधानीपूर्वक प्रारूपित किया गया है।



प्रकृति का अध्ययन : छोटे समूहों में काम करते बच्चे

कहानियाँ एक चेतनशील तरीक़ा हैं। इनके द्वारा हम उन विविध विस्मयकारी मान्यताओं और अन्त:क्रियाओं का अर्थ समझने की कोशिश करते हैं जिनसे हम गुज़रते हैं। साथ ही हम हमारी कल्पनाशीलता को 'मुमकिन दुनियाओं' के बारे में सोचने के लिए पोषित करते हैं। बच्चों को भी संवेदी अनुभवों के माध्यम से प्रकृति से जुड़कर और कुछ करके, बनाकर, उगाकर वर्तमान में जीने की आवश्यकता है।

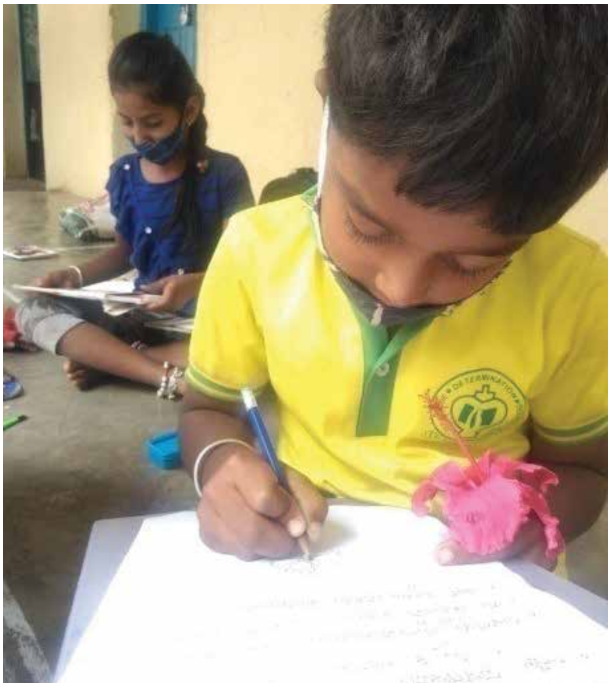
कृष्ण कुमार ने लॉकडाऊन के बीच 'बाहर सीखने' के आवश्यक मूल्य और ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी समृद्ध क्षमता के बारे में लिखा। 'बरसात का मौसम प्रकृति पर ध्यान देने, चीज़ों को रिकॉर्ड करने और जाँच करने के लिए बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। बगुले और अन्य बड़े पक्षी भोजन की तलाश में धान के तर-बतर खेतों में इत्मीनान से चलते हैं। उनकी अलग-अलग मुद्राओं को देखना और उनके चित्र बनाना ख़ुशी देता है। बारिश का पानी भरने से चींटियाँ अपने भूमिगत घरों से बाहर निकल आती हैं। इस मौसम में तितलियाँ प्रवास करती हैं। ये तो उदाहरण मात्र हैं; पौधों और पेड़ों में देखने के लिए सैंकड़ों चीज़ें होती हैं।'[vii]

हम सभी की उन्नति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण तरीक़ों में से एक है कि हम अपने परिवेश के लिए 'जागृत' रहें चाहे वह शहर हो, परिनगरीय क्षेत्र या गाँव।

गतिविधियाँ जो बच्चों को उनके परिवेश से जोड़ती हैं

हाल ही में, जिस लर्निंग सेंटर से मैं जुड़ी हूँ, उसके दो शिक्षकों ने क़रीब के शासकीय प्राइमरी स्कूल के बच्चों के एक समूह के साथ एक नई प्रकाशित पुस्तक *पिशी और मैं*[viii] साझा की। यह उपनगरीय सड़कों पर अपनी बुआ के साथ चल रहे एक बच्चे की कहानी है। ऐसा क्या है जिससे यह एक कहानी बन जाती है? इसमें बच्चे को रुककर चीज़ों को देखने, सूँघने, छूने, इकट्ठा करने और सँजोने की अनुमति है।

एक स्थानीय सरकारी प्राइमरी स्कूल में यह क़िताब पढ़ने के बाद रद्दी काग़ज़ से ओरिगेमी बक्से बनाए गए। अगले सत्र के दौरान, बच्चे अपने द्वारा एकत्र किए गए 'खजानों' को दिखाने के लिए लौटे। उनमें से कई ने अपने बक्सों के लिए ढक्कन



फूलों और स्वरूपों का मोबाइल प्रदर्शन करने में जुटे बच्चे।

बनाए और कुछ ने अपने बक्सों को रंगीन काग़ज़ और बीजों से सजाया। एक बच्चे ने बताया कि उसने अपनी माँ को बक्सा बनाना सिखाया था। उन्होंने अपने बक्से में रखने के लिए कई सारी चीज़ें एकत्रित की थीं — पत्थर, पंख, फलियाँ, सीप, फूल, लेस के टुकड़े, कप्पोचिप्पु (समुद्र के सीप) और सुतली-धागे के टुकड़े।

पिछले कुछ महीनों में, अप्रैल में दूसरे लॉकडाउन को छोड़ कर, लर्निंग सेंटर की टीम के तीन सदस्यों ने नेचर कंज़रवेशन फ़ाउण्डेशन के सहयोग से पुस्तकालय गतिविधियों और प्रकृति अध्ययन पर पास के गाँव के बच्चों के साथ काम किया है।

हाल ही में, बच्चे फूलों और स्वरूपों से सम्बन्धित एक परियोजना में लगे हुए हैं।[ix] इसमें कई क्रियात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं जैसे चित्र बनाना, पॉप अप (अचानक प्रकट होने वाले चित्र या खिलौने) बनाना, कहानियाँ साझा करना, फूलों के बारे में गीत और कविताएँ सीखना व अवलोकन अभ्यास करना जिनसे बच्चों को मिट्टी, हवा और पानी तथा वनस्पतियों और जीवों के बीच के सम्बन्धों के जटिल नेटवर्क को समझने में मदद मिली। उन्होंने यह भी समझना शुरू कर दिया है कि दिन और रात तथा मौसम के स्वरूप प्राकृतिक संसार को कैसे प्रभावित करते हैं।

फूलों को क़रीब से देखने से बच्चों को एक जीवन चक्र का बोध हो सकता है जहाँ क्षरण और पुनर्जनन जीवन का एक आन्तरिक भाग हैं। बीज, कलियाँ, फूल, गिरी हुई पंखुड़ियाँ और फल सभी एक ही प्रक्रिया का भाग हैं जो एक बीज से दूसरे बीज के निर्माण में, जीवन से नए जीवन की ओर बढ़ते हैं। प्रकृति के सम्पर्क में रहने से हमें अपनी नाज़ुकता और मज़बूती तथा व्यापक दुनिया में हमारी भूमिका का एहसास होता है। कुछ लोगों को यह लग सकता है कि इस समय तितलियों और फूलों को देखने का कोई बहुत फ़ायदा नहीं है। लेकिन बच्चों की उत्सुकता और सवालों से लगता है कि यह बच्चों की बुनियादी शिक्षा, कल्पनाशीलता और सवाल पूछने की भावना को बढ़ावा देने की एक सम्भावना थी। बच्चों ने इस तरह के सवाल पूछे — 'कुछ फूलों के एक से अधिक रंग क्यों होते हैं?' 'कुछ फूल रात को क्यों खिलते हैं?' 'गुड़हल के फूल के लम्बे धागे क्यों होते हैं (पुंकेसर का ज़िक्र करते हुए)?'

कल्पवृक्ष[x] द्वारा अँग्रेज़ी और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में प्राकृतिक परिवेश पर क़िताबें प्रकाशित की गई हैं। ये क़िताबें जानकारी का बहुत ही उत्तम स्रोत हैं और अलग-अलग आयु के बच्चों के लिए कल्पनाशीलता और संवेदनशीलता के साथ बनाई गईं हैं।

निष्कर्ष

महामारी का यह दौर ज़्यादातर लोगों के लिए विचलित करने वाला रहा है, चाहे बच्चे हों या वयस्क। शायद कई बच्चों का दुनिया की स्थिरता और स्वास्थ्य से आत्मविश्वास हिल गया है। अँग्रेज़ी शब्द 'catastrophe' (तबाही) ग्रीक भाषा से आया है जिसका अर्थ है, 'क्रान्तिकारी परिवर्तन' या 'a turning point'। हालाँकि, लोगों में काम करने के परिचित तरीक़ों पर लौटने की इच्छा है, लेकिन यह एहसास भी है कि वर्तमान और भविष्य की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना होगा।

बच्चों के स्कूल वापस लौटने के साथ तात्कालिक स्थिति से जुड़े संकट के एहसास का केवल यह अर्थ नहीं हैं कि त्वरित सीखने के लिए आगे बढ़ना है, ताकि जो खोया है उसे पाया जा सके। कुछ समय के लिए थम जाने की भी आवश्यकता है ताकि हम स्वस्थ और तरोताज़ा हो सकें तथा पहचान सकें कि विकास के लिए ज़रूरी अर्थपूर्ण और स्थाई सीखना क्या होता है। कहानियों को साझा करना, प्रकृति की ओर ध्यान देना और सचेत रहना, ऐसे कौशलों का अभ्यास करना जो दूसरों के और ख़ुद अपने जीवन को समृद्ध करते हैं, चीज़ों को बनाना और दूसरों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होना कुछ ऐसे तरीक़े हैं जो शिक्षकों और बच्चों को एक अधिक जीवनदायी भविष्य के लिए तैयार करेंगे।

Endnotes

i *The Novel Coronavirus: We Can Stay Safe*, Pratham Books.
ii *Everyday Superheroes*, Minakshi Diwan, Pratham Books.
iii Maher M and J Thomas have kindly shared these photos and texts.
iv Story Cards are a rich multilingual resource of stories for young readers across genres. They are published by Rajalakshmi Srinivasan Memorial Foundation. See https://rajifoundation.in/storycards/about.html
v Quoted in Weinreich T. 2000. *Children's Literature – Art or Pedagogy?* Frederiksburg: Roskilde University Press. pp112.
vi One adaptation of this story for children is *Amal and the Letter from the King*, retold by Chitra Gajadin and illustrated by Helen Ong. 1993. Rupa & Co.
vii Krishna Kumar. *Schools Without Freedom*, The Hindu, August 20, 2020.
viii Timira Gupta. *Pishi and Me*. Pratham Books.
ix Roshan Sahi, Gousia Taj and Sarojini Ramachandra Hegde facilitated this project.
x See https://kalpavriksh.org/product-category/childrens-books/

Resources

For more games and activities, visit Nature Conservation Foundation website: https://www.ncf-india.org/blog/hidden-housemates-part-1



जेन साही ने एक वैकल्पिक स्कूल में कई वर्षों तक पढ़ाया। फिलहाल वे गोवा में बुकवर्म के लाइब्रेरी एजुकेटर्स कोर्स में पढ़ाती हैं। वे एक शिक्षार्थी केन्द्र से भी जुड़ी हैं जो स्थानीय सरकारी स्कूलों के साथ काम करता है। यह केन्द्र मुख्य रूप से बच्चों के साथ पुस्तकालय गतिविधियाँ और ऐसे सत्र आयोजित करता है जिनमें बच्चों को अवलोकन, कहानियों और कला से जुड़े विभिन्न कार्यों के माध्यम से प्रकृति पर ध्यान देने का मौक़ा दिया जाता है। उनसे janehelensahi@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनु गुप्ता